1

प्रतिज्ञाएं पूरी करना

(2 कुरिन्थियों 1:12-2:4)

''... इसलिए कि तुम उस बड़े प्रेम को जान लो, जो मुझे तुम से है'' (2:4)।

कई संस्थाओं के हाल ही के वर्षों में स्कैंडलों में लिप्त होने से निस्संदेह लगभग सभी संस्थाओं तथा उनके अगुओं के बारे में लोगों के एक बड़े वर्ग को संदेह पैदा हो गया है। ''जन सेवक'' शब्द का अर्थ जनता की सेवा न करने वाले उन लोगों की कहानियों की सनसनीखेज खबरों के बाद विडम्बना से भर गया है। स्कैंडलों से यह सुझाव नहीं मिलता कि सभी सरकारी तथा निजी संस्थान स्वयंसेवा और भ्रष्ट नेताओं के द्वारा चलाए जाते हैं, जिनका एकमात्र उद्देश्य अपनी उन्नति करना और लोगों को छलना है। तौभी यह अफ़सोस की बात है कि वह संदेह का कारण बने हैं, जिससे हर संस्थान को लोगों के बीच में अपने औचित्य को दिखाना आवश्यक हो गया है।

इतने व्यापक रूप से पाई जाने वाली दोष दर्शता स्वाभाविक रूप से कलीसिया के जीवन में भी मिलती है। हमारे सामने न केवल शिक्षा सम्बन्धी मुद्दे हैं, जो यह तय करने के लिए होते हैं कि प्रामाणिक सेवकाई क्या है। हमारे सामने सेवकाई के सही आदर्श को ढूंढ़ने की चिंता ही एकमात्र नहीं है। कलीसिया की विभिन्न सेवकाइयों में भाग लेने वालों को निष्ठा दिखाना आवश्यक है। आज की दोष दर्शिता में हमने अपनी उन्नति के प्रतीकों के कलीसिया के हर निर्णय के कार्यक्रम की समीक्षा के लिए आंख और कान दे दिए हैं।

आम आलोचना यह की जाती है कि जो परमेश्वर के लिए बोलने और ''नई सृष्टि'' (5:17) होने का दावा करते हैं उनका जीवन दूसरे लोगों से किसी प्रकार अलग नहीं होता: मसीही जीवन तथा सेवा के लिए किसी के स्थान के महत्वपूर्ण निर्णय सोचे-समझे और सांसारिक मानकों के आधार पर लिए जाते हैं। कई मसीही लोग सेवा के लिए उसी प्रकार स्थान बनाते हैं, जिसे कम्पनी में पदवी लेने की बात हो: उनकी प्राप्ति के लिए कौन-सा समूह बेहतर रहेगा। हम कलीसिया के अगुओं का चयन उन्हीं मानकों से करते हैं जिनके अनुसार शेष संसार में किया जाता है। दोषदर्शी के दृष्टिकोण से, सेवक बिकाऊ है, जो उन्नति तथा पहचान के लिए एक से दूसरी सेवकाई में जाने को तैयार रहता है।

स्पष्टतया दोषदर्शिता हमेशा सही नहीं होती। हम अपने निर्णय लेने के लिए हमेशा सांसारिक मानदण्डों का इस्तेमाल नहीं करते। परन्तु आमतौर पर हम कलीसिया के मिशन तथा इसमें अपना स्थान बनाने के लिए सांसारिक कसौटी का इस्तेमाल करने के प्रलोभन में पड़ते हैं। ''मेरी पीढ़ी'' जिसमें हम रहते हैं आम तौर पर हमें पहले अपनी तरक्की देखने के प्रलोभन की पेशकश करती

है। निस्संदेह दोषदर्शी कई बार सही होता है।

2 कुरिन्थियों आलोचना की उन किस्मों पर प्रतिक्रिया है, जो आम तौर पर आज की जाती है। यह अन्यायपूर्ण लगता है कि पौलुस को उसी कलीसिया द्वारा रक्षात्मक स्थिति में रखा जाए जिसे उसने स्थापित किया था और उसे उन आरोपों का उत्तर और प्रमाण देना चाहिए (13:3) कि मसीह उसमें होकर बोलता है। पुस्तक का शानदार तथ्य यह है कि उसने आरोपों पर प्रतिक्रिया बड़े ध्यान से दी, क्योंकि केवल निष्ठा से काम करना ही काफ़ी नहीं है; दूसरों को पता होना चाहिए कि हमने निष्ठा से काम किया है (तुलना 1:13, 14; 13:6)।

मुद्दा संदेश देने वाले का है

अपने पत्र लिखने का पौलुस का सामान्य ढंग पत्र लिखने के कारण उसके मन में पाई जाने वाली चिन्ता का संकेत देना होता था। उसके पत्र हमेशा बड़ी समस्याओं के जवाब में लिखे जाते थे। आम तौर पर यह चिन्ता धन्यवाद (या आशीष) वाले भाग के तुरन्त बाद लिखी जाती थी। 2 कुरिन्थियों में यह चिन्ता 1:12-14 में है, जो इस पत्री का आधार बनाती है। 2 कुरिन्थियों का मुद्दा, जैसा कि इन आयतों से पता चलता है, प्रेरित का व्यवहार है। पौलुस ने 2 कुरिन्थियों इस जवाब में लिखा कि कैसे ''जगत में हमारा चरित्र'' था (1:12)। 1:12-14 के सुर से यह सुझाव मिलता है कि उसके निजी आचरण पर हमला हुआ है। वह अपने पाठकों को ''समझाना'' चाहता है (1:13)।

''एक बात जिसका हम घमण्ड करते हैं'' पौलुस कहता है (1:12)। ''घमण्ड'' (*kauchesis*) के लिए पौलुस का शब्द आमतौर पर नकारात्मक अर्थ ''गर्व'' के साथ मिलता है। इस शब्द में आम तौर पर उस व्यक्ति का विचार है, जो परमेश्वर की भूमिका से अलग अपने काम पर गर्व करता है (तुलना रोमियों 3:27; 4:2)। 2 कुरिन्थियों में इस शब्द का एक विशेष अर्थ है, क्योंकि पौलुस के विरोधी अपने कर्मों पर गर्व करते थे, जो सुझाव देता था कि वह उनकी तुलना में कमज़ोर प्रेरित है (तुलना 5:12; 10:13, 17)। उनका गर्व करना मानवीय मापदण्डों के आधार पर था।

परन्तु गर्व करने की एक उपयुक्त किस्म है (तुलना 1 कुरिन्थियों 1:31)। जो ''प्रभु में'' है और परमेश्वर के सामने इसकी कर्ज़दारी को मानती है। ''घमण्ड'' (*kauchesis, kauchema*) के लिए शब्दों का इस्तेमाल किसी के काम ''पर घण्मड'' के लिए होता है। रोमियों की पुस्तक में पौलुस कहता है, ''सो उन बातों के विषय में, जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, मैं मसीह यीशु में बढ़ाई कर सकता हूं'' (रोमियों 15:17)। 2 कुरिन्थियों में उसने उन कामों को स्मरण करके, जिनमें वह ''घमण्ड करता'' है, दूसरों के घमण्ड का बार-बार जवाब दिया (10:16; 12:1, 9)। पौलुस के अनुसार कोई दूसरों ''का घमण्ड'' कर सकता है। 7:4 के अनुसार उसे उस कलीसिया में ''बड़ा घमण्ड है'' जिसे उसने आरम्भ किया था (तुलना 9:2)। वास्तव में पौलुस 1:12 में बताता है कि उसे किस ''का घमण्ड'' है ताकि उसके पाठक उस ''पर घमण्ड'' कर सकें। यह तथ्य इस बात का सुझाव देता है कि मसीह का सच्चा सेवक व्यवहार की उस शैली में जो विशेष रूप से मसीही शैली है घमण्ड कर सकता है। 2 कुरिन्थियों के एक बड़े भाग में पौलुस की अपनी सेवकाई की विशेष बातों को याद किया गया है, जो मसीह के सच्चे सेवक

के रूप में उसकी ''सराहना'' करते हैं (6:4)।

2 कुरिन्थियों की विशेष बात पौलुस की जीवनी की असाधारण बातें हैं और इसमें से अधिकतर अपने बचाव में किए गए घमण्ड का एक रूप है (तुलना 6:1-10; 11:23-33)। हमारी स्वाभाविक प्रतिक्रिया किसी भी प्रकार के घमण्ड से परेशान होने की है। पौलुस का अनुभव सुझाव देता है कि जिन बातों से हमारी विश्वसनीयता स्थापित हो, उन्हें याद करना लाभदायक है। हम अपने अनुभवों के ऐसे व्यक्तिगत शब्दों में बोलने में संयमी हैं और दूसरों की बात सुनते हैं जो अपना इतिहास याद करते हैं। परन्तु पौलुस का ''घमण्ड'' इस बात को याद करना है कि कई बार हमें इसे दिखाना आवश्यक होता है कि हम अपनी सेवकाई के विषय में सुस्त और लापरवाह नहीं बने हैं। ठोस कामों में ही हम दिखाते हैं कि हम अपने काम में ''घमण्ड करते'' हैं।

पौलुस को उसी आरोप का उत्तर देना है जो आज आमतौर पर मसीही व्यक्ति को देना आवश्यक है कि उसके व्यवहार ''सांसारिक'' विचार तय करते हैं। वह इस बात से इनकार करता है कि उसने ''शारीरिक ज्ञान [*en sophia sarkike*]'' (1:12) से काम किया। ''या जो करना चाहता हूं क्या शरीर के अनुसार [*kata sarka*] ? करना चाहता हूं'' उसने पूछा (1:17)। इस बचाव के पीछे यह आरोप है कि वह ''नई सृष्टि'' (5:17) की तरह नहीं जो आत्मा के दान के द्वारा चलता हो, बल्कि ''शरीर के अनुसार [kata sarka]'' (5:17) बोलता और काम करता है। यानी कुछ लोग कह रहे हैं कि पौलुस के जीवन को शरीर (1:12, 17; 5:16 में *sarx*) चलाता है। उसके विरोधी दावा करते हैं कि उसमें दूसरों से कोई फर्क नहीं है, और यह कि वह भी किसी भी दूसरे व्यक्ति की तरह सोच समझकर और अपनी ही सेवा कर रहा है।

उस पृष्ठभूमि के विपरीत, पौलुस दावा करता है कि उसने एक आत्मिक व्यक्ति की तरह व्यवहार किया और उसने ''परमेश्वर के योग्य पवित्रता और सच्चाई'' से व्यवहार किया। स्पष्टतया यह मुद्दा महत्वपूर्ण था क्योंकि 2:17 में पौलुस इस बात पर ज़ोर देता है कि उसने अपना जीवन सच्चाई से चलाया। पौलुस अपनी सेवकाई में ''चालाक'' या ''चतुर'' होने के आरोप से बचा नहीं है। इस कारण वह दावा करता है कि मसीह ने उसके व्यवहार में बदलाव किया है (1:12-14)।

पौलुस की सफ़ाई हमें याद दिलाती है कि कोई दोषदर्शी की नज़र से बच नहीं सकता। कई बार कलीसिया के अगुवे तथा विभिन्न सेवकाइयों में लगे हुए लोगों को अपने व्यवहार में मसीही न होने के प्रतीकों के लिए परखा जाता है। ''नई सृष्टि'' होने का दावा करने का दाम हमें यह चुकाना पड़ता है कि हमें उस काम में जिसमें हमने अपने आपको लगा दिया है कुछ ''नया'' दिखाने की चुनौती मिलती है।

मसीही लोग तथा उनके निर्णय

जिस घटना से पौलुस की ईमानदारी पर शक हुआ वह हमारे जीवन में अक्सर आती रहती है, जिनसे न समझी पैदा होती है। पौलुस ने एक बार कुरिन्थुस के लोगों को वचन दिया था कि वह उनके साथ अधिक समय बिताएगा, शायद मकिदुनिया को जाने (1:15, 16), सर्दियों में (1 कुरिन्थियों 16:5, 6)। 1:15, 23 के अनुसार पौलुस की योजनाएं सिरे नहीं चढीं। योजनाओं में इस बदलाव से यह लगा कि वह निर्णय लेने में ''चंचल'' और ''सांसारिक'' है। ऐसी घटना

से पैदा होने वाली न समझी की हम कल्पना कर सकते हैं: ''वह अपना वचन नहीं निभाता''; ''उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता क्योंकि वह बात का इतना पक्का नहीं है। वह अपने फायदे के लिए बिना बताए योजनाएं बदल लेगा।'' मसीह के किसी सेवक पर ये आरोप बड़े गम्भीर हैं।

जब किसी की वफ़ादारी और विश्वसनीयता पर शक किया जाए तो वह सफलतापूर्वक मसीह की सेवा नहीं कर सकता। इसी कारण 1:18-20 में पौलुस दिखाता है कि उसकी बात विश्वासयोग्य है। ''मैं बात में हां-हां भी करूं और नहीं-नहीं भी करूं'' (1:18)। फिर वह याद दिलाता है कि मसीही घोषणा कभी अस्पष्ट ''हां भी और नहीं भी'' नहीं होती। हर आराधना सेवा में, जब कलीसिया कहती है, ''आमीन,'' तो यह इस बात को याद करती है कि यीशु परमेश्वर की ''हां'' है। वास्तव में पौलुस परमेश्वर की प्रतिज्ञा के शीर्षक के सारे पवित्र शास्त्र को संक्षिप्त कर देता है। यीशु में कलीसिया को मालूम है कि परमेश्वर का वचन ''व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा'' और यह कि यह ''जो मेरी इच्छा है, उसे पूरा करेगा'' (यशायाह 55:11)।

अपने वचन के साथ परमेश्वर की वफ़ादारी पर एक छोटा लेख (1:20) पहली नज़र में लगता है कि पौलुस अपने व्यवहार के बचाव में बेतुका है। परन्तु पौलुस के लिए यह दिखाने के लिए इसका व्यापक महत्व है कि उसका व्यवहार उस परमेश्वर से मेल खाता है, जो अपना वचन निभाता है। परमेश्वर के स्वभाव और सेवक के प्रामाणिक चरित्र में सम्बन्ध है।

मसीही की पहचान क्या है? पौलुस के अनुसार, एक परीक्षा, किसी की बात विश्वसनीयता तथा दूसरों के साथ वचन निभाना। मसीह का सच्चा सेवक यीशु मसीह में परमेश्वर के वचन के लिए उसकी वफ़ादारी की घोषणा ही नहीं करता। मसीही की पहचान यह है कि वह दूसरों के लिए भी निष्ठा भरा जीवन बिताता है।

हमारे समाज में प्रामाणिकता की परीक्षा को सराहा नहीं जाता, क्योंकि वचन निभाना प्राथमिकता की चीज़ नहीं है। हमारे युग का प्रचार हमें ''अपने विकल्प खुले रखने'' और हर हाल में माहौल में ढलने के लिए कहता है। ''अपने विकल्प खुले रखना'' में अपने वचन को निभाने से इनकार करना आता है, जो हमारे निजी लाभ के लिए न हों। हमारे युग का प्रचार यह सुझाव देता है कि अपनी पत्नी या पति के साथ हर हाल में बने रहना असम्भव है, क्योंकि ऐसा समर्पण व्यक्तिगत स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप करता है। हमारी ऐसी संस्कृति है, जो किनारे पर खड़ा होने पर ज़ोर देती है, जो अपने आपको धनी बनाने के विकल्प को मानने को तैयार रहती है।

यह ''सांसारिक'' विचार कलीसिया के लिए स्पष्ट प्रलोभन है। परेशानियों वाली कलीसिया के वफ़ादार रहना कठिन है। समर्पण की पीड़ा आपस में बांटना चुनने वाले लोग उस समाज के वफ़ादार रहने का जिसकी समस्याएं उसके नियन्त्रण से बाहर हैं, भारी मनोवैज्ञानिक तथा भौतिक दाम चुकाते हैं। उदाहरण के लिए, पड़ोसियों के नगर के चरित्र का बदलना निश्चिय रूप से कलीसिया की स्थिति नाजुक कर देता है। हो सकता है कि कलीसिया को अतीत में लिए गए गलत निर्णयों के कारण कष्ट उठाना पड़े। हम उन निर्णयों के नमूने से भी असंतुष्ट हो सकते हैं, जिनसे कमज़ोर नेतृत्व की झलक मिलती हो। ''मानवीय दृष्टिकोण'' से इसका उपयुक्त प्रत्युत्तर ''अपने विकल्प खुले रखना'' और समाज की समस्याओं में शामिल होने का विरोध करना है।

पौलुस ज़ोर देता है कि जब दूसरे लोग उस पर चालाक होने का आरोप लगाते हैं, तो

उसका व्यवहार सुसमाचार से मेल खाता है। उस परमेश्वर की ओर से जो अपनी प्रतिज्ञाओं के लिए ''हां'' कहता है, उसने अपनी व्यक्तिगत वचनबद्धता को गम्भीरतापूर्वक लेना सीखा है। परिस्थितियों के कारण चाहे उसकी योजनाओं में बदलाव करना पड़ा, पर उसके कदम व्यक्तिगत कुशलता से नहीं चलते थे। पौलुस के लिए एक व्यक्तिगत चरित्र था जो सुसमाचार की कहानी से बना था।

पौलुस की सफ़ाई इस बात का संकेत देती है कि प्रामाणिक रूप से चेला होना केवल सही बातें कहना ही नहीं है। इसमें व्यवहार भी शामिल है, जो हमारे संदेश से मेल खाता हो। सोरेन कियरकेगार्ड एक आदमी की कहानी बताते हैं, जो पागलों की जेल से तो बच गया, परन्तु अगले नगर के लोगों द्वारा उसे पागल के रूप में पहचानने पर उस संस्थान में वापस लाया गया। उसने कुछ साधारण रूप से मानी जाने वाली सच्चाई को ऊंचे-ऊंचे शब्दों में पुकारकर अपने पागलपन को छिपाने का निर्णय लिया जिससे उसके सुनने वालों में साबित हो जाए कि वह पागल नहीं है। वह सड़क के किनारे-किनारे लोगों को यह कहते हुए जा रहा था, ''पृथ्वी गोल है, पृथ्वी गोल है।'' कहने की आवश्यकता नहीं कि उसे पहचान लिया गया और पागल खाने में डाल दिया गया। इस कहानी का बताने वाला यह सुझाव दे रहा था कि केवल सच्चाई बताना काफ़ी नहीं है। सच्चाई की बेतुकी बात यह थी कि यह उसके मुंह से निकली थी जिसका जीवन उस सच्चाई से प्रभावित नहीं हुआ था।[1]

सच्चा मसीही कहानी सुनकर बनाया गया है। यह सच है कि हम अपना नहीं, बल्कि मसीह का प्रचार करते हैं, परन्तु हमारी घोषणा तथा शिक्षा में एक ''।'' है। 2 कुरिन्थियों ''मैं'' का बार-बार आना याद दिलाता है कि सुसमाचार विश्वास दिलाने वाला केवल तभी होता है जब इसका सेवक विश्वास दिलाने वाला हो।

इस आरोप के विरोध में कि पौलुस ''शारीरिक'' मूलतया, ''शरीर का मनुष्य'' (1:12) व्यक्ति है, पौलुस अपने पाठकों को याद दिलाता है कि जो परमेश्वर अपना वचन निभाता है उसी ने उसे भेजा (1:21) और ''गारंटी'' के रूप में कलीसिया को आत्मा दिया है (1:22; तुलना 5:5; इफिसियों 1:14)। परमेश्वर की गारंटी, जो आत्मा के द्वारा कलीसिया में पहले से है, उसकी विश्वसनीयता को याद दिलाने के लिए है। पौलुस इस तरह से व्यवहार करता है, जो परमेश्वर की वफ़ादारी से मेल खाता है।

''प्रेम जो विशेषकर मेरा तुम्हारे लिए है''

पौलुस ने अपनी बात पूरी करके अपने उद्देश्यों की जांच का अवसर क्यों नहीं दिया? 1:23 में वह एक स्पष्ट उत्तर देता है, जब वह कहता है, ''मैं अब तक कुरिन्थुस में इसलिए नहीं आया कि मुझे तुम पर तरस आता था।'' फिर वह कुरिन्थी कलीसिया के साथ खतरनाक सम्बन्ध का विवरण देता है, जो कहीं और नहीं बताया गया। 1:3-2:13 में दिखाए गए अनुसार, कुरिन्थुस की कलीसिया ने पौलुस को बहुत दुख दिया था। एक अवसर पर पौलुस दुखी होकर वहां गया था (2:1) किसी व्यक्ति द्वारा खुले विरोध का सामना करने के लिए गया था, जिससे उसे बड़ी पीड़ा हुई थी (2:5)। बाद में उसने एक पत्र ''बड़े क्लेश और मन के कष्ट से'' लिखा (2:4)। बाद के एक अवसर पर पौलुस त्रोआस में गया, जहां उसे तीतुस से भेंट की आशा थी। सफल

मिशनरी परिश्रम के बीच में भी (''प्रभु ने मेरे लिए एक द्वार खोल दिया''), पौलुस ''छुट्टी'' लेकर मकिदुनिया को गया (2:13)। पौलुस के लगाव की सीमा 2:13 में बताई गई है, जहां वह कहता है, ''मेरे मन में चैन न मिला, इसलिए कि मैंने अपने भाई तीतुस को नहीं पाया; ...।'' एक आज्ञा न मानने वाली कलीसिया की खातिर उसने सफल मिशन को जोखिम में डाल दिया!

परेशान कलीसिया के साथ भावुक तौर पर बने रहने में अजीब तरह से व्यर्थ लगते हैं। हमें एक झगड़ालू और अकृत्तज्ञ कलीसिया से निपटने के लिए बड़ी सफलता की सम्भावना को त्यागने की उसकी इच्छा आसानी से समझ नहीं आती। परन्तु जैसा कि वह बाद में कहता है (11:28), पौलुस को ''सब कलीसियाओं की चिन्ता प्रतिदिन दबाती है।'' समकालीन भाषा में हम कह सकते हैं कि पौलुस के लिए मसीही की पहचान कलीसिया की खातिर दबाव को स्वीकार करना है।

पौलुस की ''सब कलीसियाओं की चिन्ता'' और उस पर लगातार दबाव स्वार्थहीनता का संकेत देता है, जो ''मानवीय दृष्टिकोण'' के विरुद्ध है। उसके कामों से पता चलता है कि उसने दूसरों की चिन्ता के कारण काम किया। ''... मुझे तुम पर तरस आता था'' वह कहता है (1:23)। ज़बर्दस्त ढंग से वह कहता है कि उसने उस ''प्रेम'' (2:4) को दिखाने के लिए जो आज्ञा न मानने वाली कलीसिया के लिए था, काम किया। इस विशेष कलीसिया से प्रेम करना आसान नहीं था।

आमतौर पर वह दबाव की स्थिति से बचने की आवश्यकता की बात करता है। कई लोग कहते हैं कि सेवकों तथा अन्य लोगों को कलीसिया की समस्याओं को अपने घर नहीं ले जाना चाहिए। परन्तु मसीही की पहचान दूसरों की खातिर असुविधा को सहने को तैयार रहना है। इसमें गलत समयों पर टेलीफोन आ जाना और हमारी सामान्य योजनाओं में प्रार्थना सभाओं का हस्तक्षेप शामिल है। इसमें दूसरों के लिए अपने आपको खाली करने की इच्छा शामिल है। हमारे काम का आदर्श वह प्रबन्धक नहीं है जो जब चाहे अपने द्वार पर ''डू नॉट डिस्टर्ब!'' लगा ले; यह तो ''दूसरों के लिए आदमी'' है जो बहुतों के लिए अपना प्राण देता है।

पौलुस का आदर्श वह एक था जिसने अपने आपको दूसरों को दे दिया। कलीसिया के साथ कष्ट उठाकर उसने अपने जीवन पर क्रूस का प्रभाव दिखाया। ''एक सब के लिए मरा, इसलिए सब मरते हैं'' (5:14)। इस तथ्य का अर्थ अपने लिए जीने का अन्त है (5:15)।

सारांश

मसीही की पहचान क्या है? पौलुस के लिए वह जीवन था, जो दिखाता है कि उसे उस कहानी द्वारा बदल दिया गया है। ''रिकॉर्ड देख लो,'' वह कहता प्रतीत होता है, ''और देखो कि यह दोषदर्शी का रिकॉर्ड है।'' मेरी निजी कहानी को देखो, और देखो ''कि यह *उस कहानी* से मेल खाती है।'' यह प्रत्युत्तर मसीही की पहचान है।

अपनी सेवकाइयों में हम एक रिकॉर्ड जमा कर रहे हैं जिसका हवाला देना हमें आवश्यक है, क्योंकि यह रिकॉर्ड हमारे समर्पण की गवाही है। यदि मुद्दा संदेश के साथ साथ संदेश देने वाले का है, तो संदेश देने वाले का आचरण ही दिखाएगा कि जो संदेश वह देता है उसने उसे कितना बदला है।

टिप्पणी

[1]सोरन कियर्कगार्ड कंक्लुडिंग अनसड्डाइंटिफिक पोस्टस्क्रिप्ट, अनु. डेविड स्वेंसन एण्ड वाल्टर लोअरी (प्रिंस्टन: प्रिंस्टन यूनिवर्सिटी प्रैस, 1941), 159; फ्रेड क्रैडक, ओवरहियरिंग द गॉस्पल (नैश्विल्ले, अबिंग्डन, 1978), 50 में उद्धृत।